आर.डी. सिंह
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की–247 667

निदेशक की कलम से .....

अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की विगत 15–16 वर्षों से चली आ रही अपनी सुखद परम्पराओं को कायम रखते हुए इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के पावन अवसर पर राजभाषा हिन्दी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के साथ–साथ अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''प्रवाहिनी'' का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' में वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक तथा कविताओं आदि लेखों का समावेश संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति गहन रूचि को प्रकट करता है।

जैसा कि विदित है, देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है, अतः भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जो भी आदेश जारी किए जाते हैं, उनका समुचित तरीके से अनुपालन सुनिश्चित करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूँगा कि वे राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करें और इस अभियान को सफल बनाने में अधिक से अधिक सहयोग दें।

''प्रवाहिनी'' पत्रिका का सदैव यही मकसद रहा है कि संस्थान के सभी पदाधिकारीगण चाहे वे तकनीकी अथवा वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के ही क्यों न हों, उन्हें राजभाषा हिन्दी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए जिससे उन्हें अपने दैनिक कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में किसी प्रकार की झिझक अथवा कठिनाई महसूस न हो। इस पत्रिका के माध्यम से मैं अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह भी अनुरोध करना चाहता हूँ कि वे हिन्दी का प्रयोग करते समय दूसरी भाषा के प्रचलित शब्दों को भी अपनाएं। दुनिया की सभी भाषाओं में विदेशी शब्दों का प्रयोग होता रहा है। किसी अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों को आत्मसात करने में कोई अपमान नहीं है बल्कि इससे तो हमारा शब्द–भण्डार और भी समृद्ध होता है तथा हमारी भाषा आम–आदमी की समझ में भी आसानी से आ जाती है। हिन्दी का प्रचार–प्रसार एवं विकास सही मायने में तभी सार्थक हो सकता है जब हम क्लिष्ट एवं जटिल शब्दों के प्रयोग से बचेंगे और सामान्य एवं प्रचलित शब्दों को अपनायेंगे। आज हम हिन्दी में कई ऐसे विदेशी शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं जो कि फारसी, पुर्तगाली, तुर्की, अंग्रेजो व फ्रांसीसी होते हुए भी हमारी भाषा में इतने घुल–मिल गए हैं कि अब ये शब्द देशी कहलाए जाने लगे हैं, जैसे–बहादुर, सुराग, बावर्ची, कालीन, कसूर, बिरादरी, जागीर, जुरमाना, मिस्त्री, नीलाम, कमीज, इस्पात, कनस्तर, बम, चिड़िया, कोट, मोबाईल, मोटर, बस, जग, टीम, गैस इत्यादि।

''प्रवाहिनी'' के इस अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके पारिवारिक–जनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के ज्ञानवर्धक, महत्वपूर्ण तथा रोचक लेखों को शामिल किया गया है। हर वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका के लेखों की भाषा सरल एवं सहज रखी गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह संस्करण सभी सुधी पाठकों को उपयोगी एवं रोचक लगेगा। पत्रिका की श्रीवृद्धि के लिए पाठकों के सुझावों का स्वागत है।

मैं ''प्रवाहिनी'' के इस अंक के सम्पादन, टंकण, प्रूफ रीडिंग एवं प्रकाशन संबंधी कार्यों से जुड़े पदाधिकारियों तथा उन समस्त विद्वत लेखकों को हार्दिक शुभकामनाओं देता हूँ जिनके रोचक एवं उपयोगी लेखों के द्वारा ही इस अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह
(आर.डी. सिंह)